मुंबई
स्टोरीज़-3

बिंदास

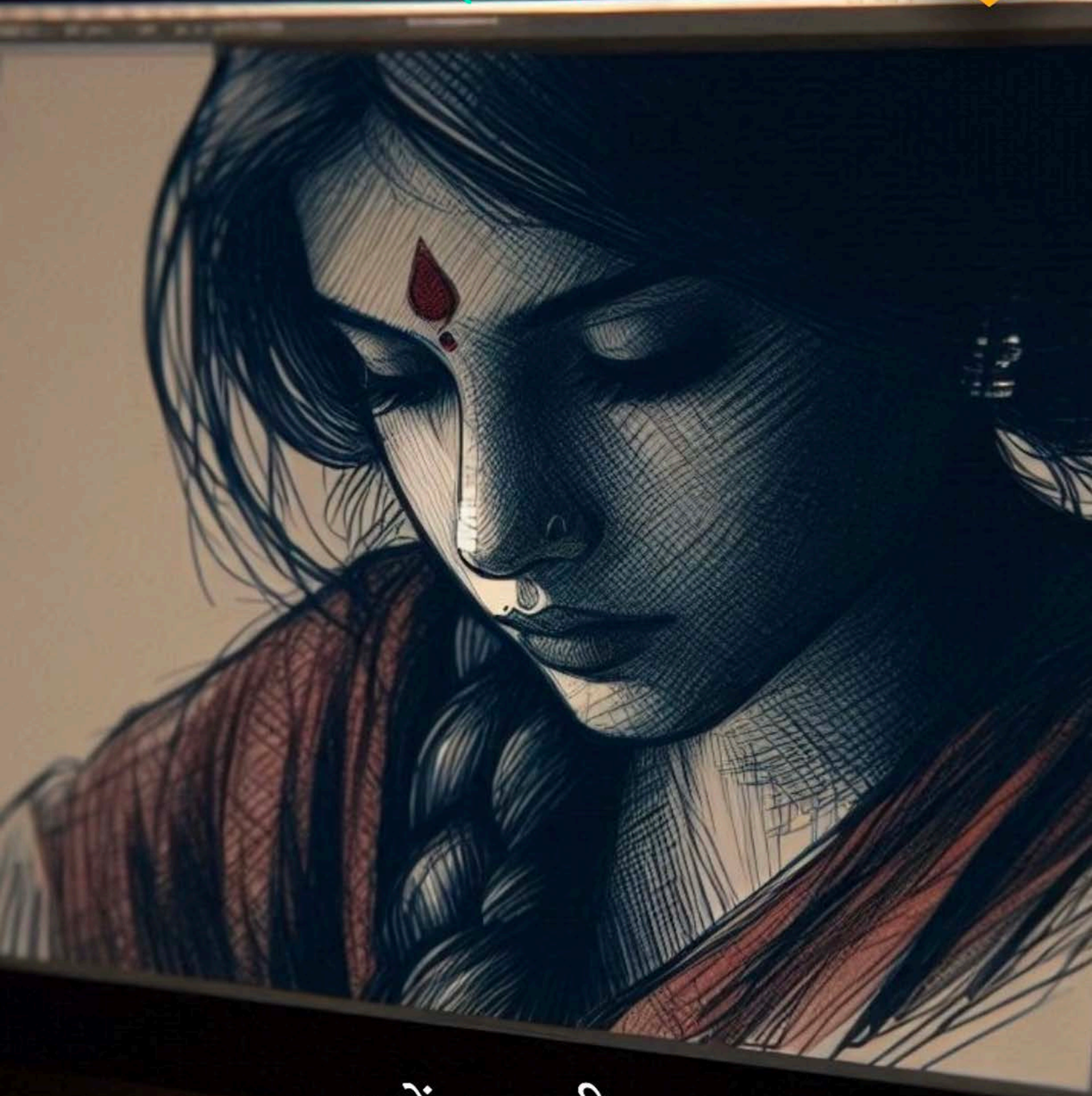

भुवेंद्र त्यागी

मुंबई स्टोरीज-3

बिंदास

भुवेन्द्र त्यागी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: सितंबर, 2024

© भुवेंद्र त्यागी

अनुक्रमणिका

बिंदास	3
विराट दिवाली बच्चों की	10
छोटे लोग, बड़ी इंसानियत	16
चक्रव्यूह	23
ईमानदार मुंबईकर	28
बदलाव	33
होली मुंबई की	38
इस रात की सुबह नहीं!	43
वो मुस्कान	46
जोश	51

बिंदास

कुछ रोज पहले की बात है। शुक्ला जी का फोन आया। मुझे लगा कि मेरठ से बात कर रहे हैं। पर वे तो मुंबई में थे और मुझसे तुरंत मिलना चाहते थे।

'क्यों शुक्ला जी, कोई बहुत जरूरी बात है क्या? अभी मैं ऑफिस में हूं।'

'बात बहुत जरूरी है त्यागी जी। मनु ऐसा करेगी, हमें उम्मीद नहीं थी। हमारी तो वो सुन नहीं रही। आप आकर समझाओ जरा…'

'ऐसा क्या किया आपकी बिटिया ने?'

'आप घर आइये। डिटेल में तभी बात होगी।'

मैंने उनका पता नोट किया और अगले दिन, दोपहर को उनके घर पहुंचना तय किया।

मुझे दो साल पुरानी बात याद आ गई। अचानक एक दिन मेरे ऑफिस के रिसेप्शन से एक फोन आया- 'सर, एक लड़की आपसे मिलना चाहती है। मनु शुक्ला।'

'भेज दो प्लीज।', मैंने रिसेप्शनिस्ट से कहा।

कुछ मिनट बाद मनु मेरे सामने थी। उसने कॉलेज में मेरे क्लास फैलो रहे अपने एक रिश्तेदार का रेफरेंस दिया। उसने 12 वीं तक मेरठ में पढ़ाई करके दिल्ली से

बीएससी की थी। मुंबई में एक मीडिया कोर्स करने आयी थी। एडमिशन हो गया था। गर्ल्स हॉस्टल में जगह भी मिल गयी थी। उसने कोर्स के दौरान प्रोजेक्ट्स वगैरह में गाइडेंस लेने का अनुरोध किया। प्रोजेक्ट्स के सिलसिले में बहुत से मीडिया स्टूडेंट्स वैसे भी मेरे पास आते रहते हैं। फिर मनु तो मेरे पुराने दोस्त की सिफारिश भी लाई थी। लिहाजा समय-समय पर गाइडेंस लेती रही। एक टीवी न्यूज चैनल में उसकी इंटर्नशिप भी करा दी मैंने। फिर उसे एक अंग्रेजी अखबार में काम मिल गया। तब वह दूसरे गर्ल्स हॉस्टल में चली गई। दो महीने पहले उसका फोन आया था। उसने बताया कि हॉस्टल में रात को लौटने के वक्त की सख्त पाबंदी है। इसलिए वह अंधेरी में किराये पर फ्लैट ले रही है।

उसके बाद उससे कोई संपर्क नहीं हुआ। अब उसके पापा के फोन से मुझे यह लगा कि शायद उसे किराये का फ्लैट खाली करना पड़ रहा है और उन्हें उसके लिए तुरंत दूसरे फ्लैट का इंतजाम करना है।

खैर! अगले दिन मैं शुक्ला जी द्वारा बताये अंधेरी के उस फ्लैट में पहुंचा। वन बीएचके, यानी दो कमरों का फ्लैट। थोड़ा सा फर्नीचर। किचन में भी थोड़ा सा सामान।